Smt. Shanta Singh.
Sr. Asst. Prof.
Dept. of L.S.W.
C.N.S.S.R.S college, Sasaram

गाँधी जी द्वारा चालित श्रम संघ आन्दोलन का सिद्धान्त

मानवीय कार्यों के सभी क्षेत्रों में एक ही नैतिक संहिता का पालन किया जाना चाहिए, हमें सत्य और अहिंसा को केवल व्यक्तिगत व्यवहार में ही नहीं, अपितु संघों, समुदायों और राष्ट्रों के व्यवहार के सिद्धान्त बनाना है। दुनिया को सिखाने के लिए मेरे पास कुछ नहीं है। सत्य और अहिंसा उतने ही पुराने हैं जितने की पहाड़। व्यक्ति की दो अन्तरात्माएँ नहीं हो सकती। एक व्यक्तिगत एवं सामाजिक और दूसरी राजनीतिक।

1. गाँधी जी के विचारों के स्रोत:-

गाँधी जी के विचारों के मूल दो स्रोत हैं- पूर्वी और पश्चिमी। पूर्वी स्रोत में सर्वप्रथम उनपर उनकी माता के व्यक्तिगत जीवन की पवित्रता और पिता की सादगी एवं सदाचार का काफी प्रभाव पड़ा। उनके जीवन और विचार पर जैन और बौद्ध धर्म, गीता और उपनिषद् आदि का भी प्रभाव पड़ा। गाँधीजी ने अपने विचार धारा के मूल आधार सत्य और अहिंसा को जैन और बौद्ध दर्शन से ग्रहण किया था। गाँधी जी स्वीकार करते हैं कि अहिंसक प्रतिकार की कल्पना उन्हें श्यामल भट्ट द्वारा रचित गुजराती कविता से हुई। इस कविता का सारांश था कि यदि कोई तुम्हें पानी पिलाये और बदले में तुमने भी उसे पानी पिलाया, तो उसका कोई महत्व नहीं है। उपकार के बदले उपकार करने में ही खूबी है।

Scanned with CamScanner

गाँधीवाद एक पूर्णतया नैतिक दर्शन है और इसके अनुरूप ही उनकी कार्य पद्धति भी पूर्ण तथा नैतिक है। सत्य और अहिंसा पर आग्रह के साथ-साथ गाँधीजी इस बात पर जोर देते हैं कि हमारे साधन साध्य के अनुरूप ही होनी चाहिए। हमारा साध्य नैतिक हो केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है। यह बात भी उतनी ही आवश्यक है कि हमारे साधन भी नैतिक हो। साधनों की अनैतिकता निश्चित रूप से साध्य की नैतिकता को नष्ट कर देती है। अत: श्रेष्ठ साध्य की प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ साधन को ही अपनाया जाना चाहिए। गाँधीजी ने तो यहाँ तक कहा है कि यदि आपके पवित्र साध्य के लिए उतने ही पवित्र साधन नहीं मिलते तो उस साध्य को भी छोड़ दें। गाँधी जी के अनुसार "साधन बीज है, साध्य वृक्ष।" इसलिए जो सम्बन्ध बीज और वृक्ष में है, वही सम्बन्ध साधन और साध्य में है।

3. सत्य और अहिंसा के सम्बन्ध में गाँधी जी के विचार :-

गाँधीवादी विचार धारा में सर्वोच्च महत्व सत्य और अहिंसा के सिद्धान्तों को प्राप्त है। सत्य और अहिंसा को गाँधीजी मनुष्य में अंतर निहित धार्मिक भाव के विकास के लिए अपरिहार्य समझते थे। सत्य के सम्बन्ध में गाँधीजी ने कहा था कि "यह एक बड़ा कठिन प्रश्न है, किन्तु स्वयं अपने लिए मैं ने इसे हल कर लिया है। तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहती है, वही सत्य है।" लेकिन सत्य को ग्रहण कर उसे व्यक्त करने के लिए अंतरात्मा शुद्ध होनी चाहिए क्यों कि शुद्ध अन्तरात्मा की वानी ही सत्य हो सकती है। अंतरात्मा की

Scanned with CamScanner

शुद्धि के लिए साधना की आवश्यकता होती है और यह साधना जीवन, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को अपनाकर ही प्राप्त की जा सकती है।

• गाँधीजी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसा प्रिय है तथा वह परिस्थितियों को ही हिंसावान बनाता है। मनुष्य के अहिंसक वृत्ति का ही प्रमाण है कि आदिम काल का वह व्यक्ति जो परिस्थिति वश नर भक्षी के रूप में जीवन व्यतीत करता था आज का सभ्य और सु-संस्कृत प्राणी बन गया है। इस प्रकार समस्त मानव इतिहास में हम देखते हैं कि मनुष्य के अहिंसक वृत्ति का विकास हो रहा है। इसमें संदेह नहीं है कि संसार में हिंसा का अपना अस्तित्व नहीं है। यह संसार मे विद्यमान है। गाँधी जी के अनुसार अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना ही नहीं है वरण अहिंसा से उनका तात्पर्य अन्य किसी भी प्रकार से अपने विरोधी को कष्ट न पहुँचाना है। 09 मार्च 1920 के Young India के अंक में गाँधी जी ने लिखा था कि "पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीव धारियों के प्रति सद्भावना का नाम है। यह तो विशुद्ध प्रेम है।"

अनेक मनुष्य द्वारा भ्रमवश अहिंसा का आशय यह समझ लिया जाता है कि बुराई को न रोकना या सामने झुक जाना ही अहिंसा है लेकिन अहिंसा किसी भी

इस और किसी भी परिस्थिति में बुराई या अत्याचार को सहन करने या उसके सामने समर्पण करने का आदेश नहीं देती वरन इसके द्वारा तो बुराई का आध्यात्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करने का आदेश दिया जाता है। स्वयं गाँधी जी ने ही कहा था कि "अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रतापूर्ण समर्पण नहीं है। वरन इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है।"

4 गाँधी जी का आदर्श समाज या राज्य :-

गाँधी जी के राजनीतिक विचारों के अन्तर्गत ही गाँधीजी द्वारा चित्रित आदर्श राज्य, जिसे वे 'राम राज्य' कहते थे कि रूपरेखा के सम्बन्ध में उन्होंने कहा है कि "राम राज्य" शब्द का प्रयोग कुछ भ्रामक हो सकता है, क्यों कि इसका शाब्दिक अर्थ है:- रामचन्द्रजी का राज्य। वस्तुतः रामचन्द्रजी के समय और आज की स्थिति में अवस्था और काल का एक लम्बा भेद होने के कारण राम-राज्य आज की स्थिति में व्यावहारिक नहीं हो सकता। गाँधीजी भी इस बात से परिचित थे। अतः गाँधी जी द्वारा राम राज्य शब्द का प्रयोग आलंकारिक अर्थ में किया गया है, शाब्दिक अर्थ में नहीं।

इस सम्बन्ध में गाँधी जी ने भी प्लेटो के समान वर्णन किया है। गाँधीजी अपने राज्य को अहिंसात्मक समाज के नाम से पुकारते हैं। गाँधी जी के इस आदर्श समाज में राज्य संस्था का अस्तित्व रहेगा और पुलिस, जेल, सेना

Scanned with CamScanner

तथा यातायात आदि शासन की बाध्यकारी सत्ताएँ भी होंगी। फिर भी यह अहिंसक समाज इस दृष्टि से है कि इनमें इन सत्ताओं का प्रयोग जनता को आतंकित और उत्पीड़ित करने के लिए नहीं बल्कि उनकी सेवा करने के लिए किया जायगा। उनके अनुसार कभी-कभी समाज विरोधी तत्वों पर दण्ड का प्रयोग करना पड़ सकता है। किन्तु इस दण्ड का रूप हिंसात्मक नहीं होगा। तभी तभी उनका समाज लोकतांत्रिक होगा।

5. गाँधीजी के अंतराष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीयता के सम्बंध में विचार :-

गाँधीजी मानवतावादी विचार के थे। वे राष्ट्र और राष्ट्रवाद के समर्थक थे। उनके अनुसार परिवार, जाति, गाँव, प्रदेश और राष्ट्र को पार करने के बाद ही विश्व बन्धुत्व या अन्तर राष्ट्रवाद के अन्तिम आदर्श को प्राप्त किया जा सकता है। अतः व्यक्ति का सामाजिक कर्तव्य परिवार से आरम्भ होता है और मानवता के सेवा तक पहुँचता है। गाँधीजी राष्ट्रवाद को अन्तर्राष्ट्रवाद के मार्ग को एक बाधा नहीं समझते थे और उनका विचार था कि अन्तर्राष्ट्रवाद और विश्व बन्धुत्व के लिए राष्ट्रीयता, आधार का कार्य करती है। उन्हीं के शब्दों में "मेरे विचार से बिना राष्ट्रवादी हुए अन्तर्राष्ट्रवादी होना असंभव है, अन्तर्राष्ट्रवाद तभी संभव हो सकता है, जबकि राष्ट्रवाद एक यथार्थ बन जाय।"

अतः इन सभी के बावजूद भी हम देखते हैं कि जीवन और संस्कृति के क्षेत्र में गाँधी की अत्यन्त महत्वपूर्ण देन है। उन्होंने अपने व्यवहार और कार्य से सिद्ध किया है कि सत्य और अहिंसा के माध्यम से मात्र व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान नहीं वर सार्वजनिक समस्याओं को भी हल किया जा सकता है

—

Scanned with CamScanner